दृष्टि The Vision

drishti

सामान्य अध्ययन

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125
Maximum Marks: 125

Name: GAGAN SINGH meena **Mobile Number:** ____________

Medium (English/Hindi): ____________ **Email:** ____________

Center & Date: ____________ **UPSC Roll No.:** ____________

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

All the questions are compulsory.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा भरा जाए *(To be filled by Evaluator only)*

Question Number	Marks
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
Grand Total (सकल योग)	

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1.

खण्ड – A

3. जहाँ सादगी नहीं, वहाँ महानता नहीं।

"व्यक्ति की महानता उसके कपड़ो से नहीं, बल्कि उसकी सादगी/चरित्र से आकी जाती है।"

वैसे तो अनादिकाल से आज तक सभ्यताओं और संस्कृतियों ने नित नये रूप धरे है तथा अपनी पहचान, महानता व विविधता को नयी ऊंचाईयों तक पहुचाया है। लेकिन सब के बीच सादगी व महानता के बीच एक अनन्य संबंध रहा है।

सभ्यताओं के प्रारंभ में आदिवासी 'आदिम व्यवस्था' से वर्तमान संचार व तकनीकी युग तक सादगी व महानता को देख सकते है। जैसे उदाहरण हमें सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक काल, मध्यकाल में ही बल्कि आधुनिक युग में भी मिलते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

चाहे तकनीकी हो या विज्ञान या फिर मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति में भी सादगी का महत्व रहता है। विश्व के महान चिंतक, दर्शनशास्त्री ने तो अपना जीवन सादगी के द्वारा ही व्यक्त किया।

उपर्युक्त चर्चा के बाद यह समीचीन हो जाता है कि सादगी क्या है? महानता का क्या निहितार्थ है? सादगी व महानता में क्या संबंध है? और सादगी को कैसे प्राप्त कर सकते है।

वास्तव में सादगी एक जीवन जीने का तरीका है। यह बहुआयामी व बहुरंगी है जो विचारों, कार्यों, प्रदर्शन, व्यक्तित्व, पहनावे, और दिखने इत्यादि में दिखती है। प्राचीन समय में बुद्ध व महावीर का महलों की आलीशान जिंदगी को छोड़कर सत्य की खोज के लिए निकलना तथा भगवान बुद्ध का "बहुहितजनाय - बहुसुखजनाय" के विचार व महावीर के जीयो और जीने के विचार उनकी सादगी को दर्शाता है। जिनसे उनकी महानता भी प्रदर्शित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

होती है।

वहीं दूसरी तरफ महानता की बात करे तो यह सादगी से प्राप्त होने वाला परिणाम है। महानता को भी एक शब्द में परिभाषित करना कठिन है क्योंकि यह भी प्रत्येक क्षेत्रों में, आयामों में, विचारों-व्यवहारों तथा कार्यों में दिखती है। सादगी को साधन माना जाए तो महानता साध्य है। यहाँ पर महान दार्शनिक सुकरात का एक कथन प्रासंगिक है -

"मैं ज्ञानी इस अर्थ में हूं कि ये जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता"।

वैसे तो सादगी व महानता की जड़े अत्यंत पुरानी है। विश्व की प्राचीन संस्कृति सभ्यताएँ इसलिए महान बनी क्योंकि वहाँ सादगी पूर्ण जीवन, रहन सहन व कार्यप्रणाली थी। जैसे कि सिंधु घाटी सभ्यताएँ के नागरिकों की शहरी नियोजन प्रणाली उनकी सादगी को प्रदर्शित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

2. इतना ही नहीं भक्ति व सूफी संतों ने तो क्रमशः धर्म में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों व आडम्बरों को हटाकर सादगी, प्रेम, भाईचारे का जीवन व्यक्त किया। इनमें नानक, कबीर, शंकरदेव, शंकराचार्य, ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, बाबा फरीद इत्यादि प्रमुख थे। नानक जी ने तो कहा है - "नानक नाम चढ़दी दा कला
तेरे नाम सरबत दा भला।"

सादगी एक ऐसा अस्त्र है जो कठिन परिस्थितियों को भी सरल बना देता है। यह रचनात्मकता, उदारता, अहिंसा, विनम्रता जैसे गुणों को पैदा करती है। ऐसा ही कुछ युवा बैरिस्टर ने अपनी वकील का पेशा छोड़कर एक धोती व लाठी लेकर देश को स्वतंत्र करने का संकल्प किया। आज वही बैरिस्टर महात्मा गांधीजी के रूप में विश्व में अहिंसा व सत्याग्रह के पुजारी के रूप में याद किया जाता है। गाँधीजी ने कहा है कि -" व्यक्ति की सबसे बड़ी महानता समाज के प्रति समर्पण व सेवा में है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गांधीजी से ही प्रेरणा लेकर नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अपने-अपने राष्ट्र में सादगी पूर्ण जीवन से रंगभेद, भेदभाव, शोषणकारी कार्यों को समाप्त किया है।

वहीं कुछ ऐसे भी लोग हुए जिन्होंने न केवल सादगी को बनाए रखा बल्कि उसका बड़े स्तर पर प्रचार भी किया। चाहे वह सम्राट अशोक की धम्म घोष हो या फिर चाणक्य की अर्थशास्त्र में उनकी नीति। आज भी सादगी अलग-अलग रूपों में समाज में व्याप्त है।

सामाजिक स्तर पर सादगी से ही व्यक्तित्व का निर्माण, सामाजीकरण की प्रक्रिया आसान होती है। समाज में परोपकारिता, स्नेह, भाईचारा, पारस्परिकता, अनुशासन, सहिष्णुता व सहानुभूति जैसे मूल्य सादगी पूर्ण जीवन से जुड़े हैं। जहाँ मदर टेरेसा ने प्लेग के रोगियों की सेवा में तथा कैलाश सत्यार्थी ने बाल श्रम व बच्चों के विकास में सादगी को प्रदर्शित किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सादगी न केवल समाज में बल्कि राजनीति में भी व्याप्त है। आज लोकतंत्र को बढ़ाने, सुशासन, नैतिक शासन व सिद्धांतों के अनुरूप चलने के लिए सादगी जरूरी है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने तो खाद्य सुरक्षा के लिए स्वयं व्रत रखने, घरेलू व कार्यालय कार्यों को अलग करने का निर्णय लिया। ऐसे ही कार्यों में सादगी हम APJ अब्दुल कलाम, बराक ओबामा के कार्यों में देखते हैं।

लेकिन आज राजनीति में सादगी के स्थान पर भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद लालच अधिक बढ़ गया है। भ्रष्टाचार की जड़े तो यहा तक मजबूत है कि कभी-कभी तो नोट गिनने वाली मशीन भी हांफ जाती है।

आज के समय में सादगीपूर्ण जीवन बदलते जलवायु परिवर्तन में न केवल आवश्यक है बल्कि जरूरी भी है। भारत की मालधारी व गारो, खासी जनजातियाँ सादगीपूर्ण जीवन जी रही है वही भूटान

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. जैसे देश नागरिकों की खुशी को बढ़ाकर वैश्विक खुशहाली सूचकांक में उच्च स्तर पर है।

खुशहाली के साथ सादगी भी अच्छे से जुड़ती है तथा इनसे ही देश का आर्थिक व मानसिक व मानव विकास होता है। सादगी से परोपकारिता, सामाजिक उत्तरदायित्व बढ़ता है। ऐसा ही कुछ वारेन बफेट के जाय ऑफ गिविंग सिद्धांत ने तथा बिल गेट्स व अजीम प्रेम के कार्यों ने किया।

उपरोक्त चर्चा के बाद यह तो सिद्ध होता है कि सादगी से महानता प्राप्त कर सकते है। हालांकि यह जानना भी आवश्यक है यदि सादगी ना हो तो फिर क्या होगा?।

सादगी के अभाव में समाज में अराजकता, व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, महिलाओं का वस्तुकरण इत्यादि को बढ़ावा मिलता है। आज वैश्विक स्तर पर बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण, नदियों की विविधता की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

हानि, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग मनुष्य की पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली के अभाव का ही कारण है।

इतना ही नहीं विभिन्न प्रकार के घोटाले, भ्रष्टाचार, अवैध खनन इत्यादियों का बढ़ना हमारी जरूरतों व लालच का परिणाम है। ना जाने कितने लाखों करोड़ो का घोटाला करके विजय माल्या, नीरव मोदी, मेहुल चौकसी ऐसों आराम की जिंदगी जी रहे हैं। गांधीजी ने कहाँ था — " बिना कार्य के धन लालच व पाप है"।

आज बदलते तकनीकी युग में व्यक्ति के सादगी पूर्ण विचार व कार्यों का स्थान तकनीकी ने ले लिया है। यहाँ व्यक्ति फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम पर कृत्रिम दिखावा करने के लिए लाखों के मोबाइल, नाइकी के जूते, अरमानी की शर्ट पहन रहा है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

आज वैश्वीकरण के इस युग में व्यक्ति की महानता उसकी सादगी से नही बल्कि उसकी धन-दौलत, बंगलों, गाड़ी, पहनने के तरीके, जूते व कपड़ों की कीमतों से आकी जाती है।

उपरोक्त चर्चा के बाद यह विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है कि कैसे हम सादगी व महानता के उच्चतम स्तर को प्राप्त करे।

सादगी व महानता दोनों को एक-दूसरे से अलग नही किया जा सकता है। सादगी को प्राप्त करने के लिए हमें अलग -अलग स्तरों पर कार्य करने होंगे तभी हम महानता को प्राप्त कर सकते है।

हमें व्यक्ति स्तर पर अपने विचारें, कार्यों, में सादगी की आवश्यकता है। इसमें गांधीजी की न्यूनतम उपभोग की अवधारणा हमें मदद कर सकती है। उन्होंने कहाँ है — " पृथ्वी हमारी आवश्यकताओं को तो पूरा कर सकती है लेकिन लालच कोनही।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

4.

समाज के स्तर पर पारस्परिकता, सामूहिकतावाद, अंतर्राष्ट्रीयतावाद के साथ समावेशी व सतत विकास की अवधारणा आवश्यक है। जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धांत व अमर्त्य सेन की क्षमता अप्रोच हमारे कार्यों में आवश्यक है।

वही आर्थिक जगत में कैम्पशिपनेट कैपिटलिज्म व हितधारक पूंजीवाद की अप्रोच व राजनीति में सुशासन, रामराज्य की संकल्पना सादगी व महानता के लिए जरूरी है।

"नजरे बदलो, नजारे बदल जायेंगे
सोच बदलो, सितारे बदल जायेंगे,
सारी कश्ती बदलने की जरूरत नही
केवल दिशा बदलो किनारे बदल जायेंगे"

हमें भी अपनी उपभोक्तावादी, शोषणकारी, व लालची जीवन शैली से सादगी की तरफ दिशा बदलनी है फिर तो महानता तो अपने आप प्राप्त हो जायेगी।

— x —

Copyright – Drishti The Vision Foundation

P.T.O.

खण्ड – B

1. "संसार का विनाश उन लोगों द्वारा नही किया जाएगा जो बुरा करते हैं, बल्कि उनके द्वारा जो, बिना कुछ किए उन्हे देखते हैं।"

— * —

1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो गुटों में बट गया जिन्में सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका नेतृत्व कर रहे थे। प्रत्येक गुट ने अपनी शक्तियों व साम्राज्य का विस्तार किया, जहाँ सोवियत संघ ने अफगानिस्तान तक अपनी सीमा को फैलाया। वही USA ने रोकने के लिए कुछ तालिबान जैसे गुरिल्ला संगठनों को समर्थन व हथियार उपलब्ध करवाये तब पश्चिम आंख बंद करके देख रहा था।

इन्ही के परिणामस्वरूप USA के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर 9/11 आतंकी हमला हुआ तो आज 20 वर्ष के "वार ऑन टेरर" के बाद तालिबान अपनी स्थिति को अफगानिस्तान में मजबूत कर रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उपर्युक्त प्रसंग हमें बताता है कि कैसे विभिन्न देशों के तालिबान व अलकायदा को नजरअंदाज करने से आज वही वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर दिये है।

प्राचीन समय से लेकर आज तक हम ऐसे अनेकों उदाहरण है जब सभ्यता, राज्य व राष्ट्रों का विनाश बुरा करने वाले को मूकदर्शक बने देखते रहने से हुआ।

हमारी पौराणिक कथा महाभारत में कौरवों का पतन इसलिए नहीं हुआ कि दुर्योधन ने एक महिला का अपमान व चीरहरण किया बल्कि इससे अधिक हुआ जब भीष्मपितामह, गुरु द्रोणाचार्य मूक दर्शक बनकर दर्शकदीर्घा सभा में उपस्थित रहकर देखते रहे।

इसी तरह रावण साम्राज्य सेना का विनाश भी उनके अनैतिक, अधर्मी कार्यों को न रोकने के कारण हुआ और अतत: सत्य की विजय हुयी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

5\. वही यदि हम वास्तविक संसार की बात करे तो समाज, राज्य, देश, साम्राज्य व [illegible] और विश्व में होनेवाली बुरी घटनाओं ने हमें प्रभावित किया है।

प्राचीन समय में तो अनेक राजाओं ने अपने साम्राज्य विस्तार के लिए अनैतिक, हिंसा का सहारा लिया वही समाज के अंदर व्याप्त कुरीतिओं व अंधविश्वासों के कारण साम्राज्यों का पतन हुआ। भारत में मौर्य, वैदिक व गुप्त काल में विभिन्न राजाओं की नीतियों के परिणामस्वरूप राज्यों का पतन हुआ।

आज वैश्विक स्तर पर अनेक बुराईयाँ, चुनौतियाँ व समस्याएं व्याप्त है। अनेक लोग इन बुराइयों को न केवल बढ़ा रहे है बल्कि इनका समर्थन भी कर रहे है। ये बुरा करने वाले लोग सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, सुरक्षा इत्यादि स्तरों पर बुरा कर रहे है।

सामाजिक स्तर पर लोगों के बीच बढ़ती घृणा, नस्लवाद, जातिवाद, असहिष्णुता, फेकन्यूज, महिला वस्तुकरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इत्यादि ने समाज में भाईचारे, प्रेम, पंथनिरपेक्षता को कम किया है। जहाँ नस्लवाद के कारण जार्ज फ्लायड की हत्या होते हैं तो COVID-19 के दौरान इनफोडेमिक की समस्या और भी गंभीर है।

सामाजिक स्तर पर ही नहीं बल्कि राजनीति में भी बुरा करने वाले लोकतांत्रिक प्रणाली पर हमला, राष्ट्रों की संप्रभुता का हनन, अंतर्राष्ट्रीयवाद को कमजोर, वैश्विक नियम आधारित व्यवस्था को चुनौती दे रहे हैं।

इस कड़ी में जहाँ म्यांमार में सैन्य शासन, रूस-यूक्रेन युद्ध, चीन की बढ़ती आक्रामकता को केवल मूकदर्शक बनकर देखना अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को विनाश की तरफ ले जायेगा।

इतना ही नहीं आज आतंकवाद ने तो अपनी जड़े इतनी मजबूत कर ली है कि यह अच्छा व बुरा आतंकवाद, राज्य-प्रायोजित आतंकवाद, धार्मिक आतंकवाद की उलझनों में उलझ गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसका जीता जागता उदाहरण पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, ISIS का उदय तथा संयुक्त राष्ट्र में आतंकवाद की सार्वभौमिक परिभाषा का तय न हो पाना है।

आज आतंकवाद से आगे साइबर आतंकवाद, हाइब्रिड वारफेयर, साइबर अपराध, अंतरिक्ष का शस्त्रीकरण हो रहा है। यदि इन्हें समय रहते नहीं रोका गया तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी पर मनुष्य नहीं बल्कि विनाश का कब्जा होगा।

यह भी उल्लेखनीय है कि जहाँ साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का पतन तो हुआ लेकिन आज नव उपनिवेशवाद, डिजिटल साम्राज्यवाद का उदय हो रहा है। अफ्रीका व एशिया के संसाधनों पर पश्चिम की बिना मतभेद के नजर व फेसबुक व ट्विटर का साम्राज्य भी दिन दूने व रात चौगुने से बढ़ रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

6. इन्हीं का परिणाम है कि आज
विश्व जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग,
शरणार्थी संकट की केवल वार्ताओं में फंस
गया है। विकसित - विकासशील देशों में
आरोप प्रत्यारोप चल रहे हैं वहीं कुछ
देश बिना किसी भय के पर्यावरण को
प्रदूषित कर रहे हैं। पर्यावरण का महत्व
भविष्य के विनाश को रोकने के लिए भी है-
या तो भविष्य हरा होगा, यदि हरा नहीं
हुआ तो भविष्य ही नहीं होगा।

भविष्य हमारा सुंदर, प्रगतिशील
हो इसके लिए बड़े स्तर पर तकनीकी विकास
हो रहा है लेकिन व्यक्ति की निजता,
गोपनीयता को नजरअंदाज किया जा रहा
है। आज परमाणु बम, हाइड्रोजन बम
जो कुछ पलों में संसार का विनाश कर
देंगे। फिर भी चीन-USA-रूस, ईरान व
उत्तरी कोरिया के बीच इन हथियारों की
होड़ मच रही है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

आज प्रौद्योगिकी 4.0 का युग है
इसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, IOT, मशीन लर्निंग,
ब्लॉकचेन इत्यादि का विकास तीव्र गति से
हो रहा है। इनके लाभों के साथ भविष्य
के जोखिम भी जुड़े हैं जहाँ चीनी कंपनी
हुआवे पर प्रतिबंध लोगों की निजता व
डेटा उल्लंघन के कारण लगाया गया है।

यह भी उल्लेखनीय है कि
पूर्व वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने चेतावनी
दी है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का अनियंत्रित
विनाश संसार को नष्ट कर सकता है।

उपरोक्त चर्चा के बाद यह
तो कह सकते हैं कि कैसे बुरा करने वाले
से अधिक विनाश केवल कुछ बिना उन्हें
देखते रहने से होता है।
लेकिन अब यह प्रश्न भी
उठता है कि कैसे इस संसार के विनाश
को रोका जाए।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हम एक ऐसे आदर्शवादी संसार की कल्पना नहीं कर सकते जहाँ कोई बुरा करने वाला हो ही नहीं। बुरा करने वाले लोग हमेशा उपस्थित रहेगें हमें केवल उन्हे रोकना है।

जब बुरा करने वालों का समाज, राज्य, राष्ट्र व विश्व के स्तर पर निंदा होगी, कार्यवाही होगी तथा उनको दंडित किया जाएगा तो शांति, खुशहाल, समृद्ध, नियम आधारित विश्व की कल्पना की जा सकती है।

आज वैश्विक स्तर पर बहुपक्षवाद, बहुध्रुवीयवाद, बहुसांस्कृतिवाद, बहुराष्ट्रीयता की संकल्पना को बढ़ाने की आवश्यकता है। चूंकि आज वैश्वीकरण के कारण विश्व एक ग्लोबल विलेज का रूप ले चुका है व व्यक्ति एक ग्लोबल नागरिक इसलिए उपर्युक्त विचार अधिक महत्वपूर्ण है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

7\. संसार को हमें न केवल संरक्षित व सुरक्षित रखना है बल्कि इससे अच्छे रूप में हमें अपनी पीढ़ियों को सौंपना है। वहीं जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में बराक ओबामा ने कहा था कि —
"हम जलवायु परिवर्तन से प्रभावित पहली पीढ़ी है।
हम जलवायु परिवर्तन को रोकने वाली अंतिम पीढ़ी है।"

इस संसार को विनाश से समृद्धि, प्रगतिशील, विकसित, समावेशी दृष्टिकोण की ओर ले जाने के लिए संयुक्त राष्ट्र की सिविंग नो वन बिहंड; गांधीजी के न्यूनतम उपभोग की अवधारणा के साथ रविंद्रनाथ टैगोर का अंतर्राष्ट्रीयवाद, विवेकानंद का आध्यात्मिकवाद व भौतिकवाद के बीच का समन्वय आवश्यक है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसके साथ ही "वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा के साथ बहुजन हिताय – बहुजन सुखाय, जीयो और जीने दो के विचारों को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDG) – 2030 धारी कुचायों को खत्म करने व इस प्लेनेट पर खुशी, समृद्धि बनाने के लिए आवश्यक है।

—— x ——

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation